ध्यान-कक्ष

समभाव-समदृष्टि का स्कूल

Symbol of oneness
DHYAN-KAKSH
SCHOOL OF EQUANIMITY & EVEN-SIGHTEDNESS

धर्म का विषय एवं प्रमुख उद्देश्य

एकता का प्रतीक

सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल
(Guiding force)
सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ

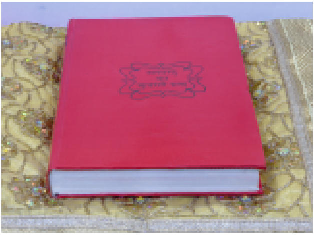

पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) | ISBN : 978-93-85423-83-3

प्रथम संस्करण | अप्रैल, 2025

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और

निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,

इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा

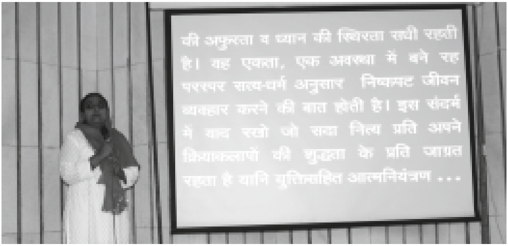
की अफुल्लता व ध्यान की स्थिरता बनी रहती
है। यह एकता, एक अवस्था में बने रह
परस्पर सत्य-धर्म अनुसार निष्कपट जीवन
व्यवहार करने की बात होती है। इस संदर्भ
में याद रखो जो सदा नित्य प्रति अपने
क्रियाकलापों की शुद्धता के प्रति जाग्रत
रहना है यानि युक्तियुक्त आत्मनियंत्रण ...

सच्चाई
धर्म
सम

धर्म का विषय एवं प्रमुख उद्देश्य

(धर्म का विषय एवं प्रमुख उद्देश्य)

ज्ञात हो कि धर्म आत्मा और परमात्मा की शाश्वतता, शाश्वत जीवन और शाश्वत मूल्यों में विश्वास, नैतिक व्यवस्था को भौतिक व्यवस्था से उच्चतर मानने में विश्वास तथा इन विश्वासों के अनुसार आचार-व्यवहार को अभिव्यक्त करता है। इस आधार पर स्पष्ट होता है कि अपूर्ण मानव सत्ता से भिन्न, सर्वोच्च पूर्ण परमात्म-सत्ता में श्रद्धापूर्ण भावनात्मक विश्वास एवं उसकी अनुभूति ही धर्म का विषय है तथा आध्यात्मिक चिंतन द्वारा सम्पूर्ण विश्व को आत्मस्वरूप यानि मित्रवत् जान तदनुकूल नैतिकता से परिपूर्ण सज्जनतायुक्त व्यवहार करना ही इसका प्रमुख उद्देश्य है।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त, सर्वोच्च आध्यात्मिक तत्व पर सुदृढ़ श्रद्धा व विश्वास रखते हुए, ब्रह्म भाव की धारणा को अपने जीवन में

सर्वोपरि स्थान दो यानि चराचर जगत के प्रति सर्व एकात्मा का भाव रखते हुए, मन, वचन, कर्म द्वारा किसी परिस्थिति व अवस्था में इसके प्रतिकूल आचार, विचार व व्यवहार न दर्शाओ। जानो यही स्व-धर्म है और निःस्वार्थता इस धर्म की कसौटी है। इसी शाश्वत धर्म का पालन सर्वत्र रमण करने वाले प्रभु श्री राम जी ने किया और सभी प्राणियों में अपने को व अपने में सबको देखते हुए हकीकत में धर्म मार्ग पर चलने का आनन्द प्राप्त किया। आप भी सजनों उनके कदमों का अनुसरण कर स्व-धर्म की निष्ठापूर्वक पालना करो और जीवन की मौज उड़ाओ। जैसा कि सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा भी गया है:-

सजनों इक धर्म सारी दुनियां अन्दर,
इक धर्म ही सजनों पालो तुम।
श्री राम रमणे वाले धर्म ते चल गए,
फिर धर्म दी मौज उड़ा लवो तुम।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान सप्तम,
भाग-प्रथम, कीर्तन न० 21)

स्वधर्म की निष्ठापूर्वक पालना करने से लाभ

जानो ऐसा करने से ही जीवन में सात्विकता, सकारात्मकता व समता का संचार होगा, सत्यज्ञान प्राप्त होगा, अंतर्मन में वैराग्य व शांति का जागरण होगा, मानसिक संतुलन व दृढ़ता सधेगी, बुद्धि निश्चयात्मक बनेगी, चित्त-वृत्तियाँ निर्मल व शीतल होंगी, आत्मसंतोष व आत्मसंयम पनपेगा, व्यक्तित्व का रूपांतरण होगा, जीवन सार्थक, सुन्दर और शोभनीय बनेगा और आप करने योग्य धर्माचरण में धीरता से प्रवृत्त हो आत्मदर्शन का लाभ प्राप्त करने में सक्षम हो जाओगे। इस तरह अमरत्व को प्राप्त हो मौत के भय से मुक्त हो जाओगे और आवागमन की त्रास भुगतने से बच जाओगे।

यही नहीं, इसी तरह जीवन स्वार्थपर लालसाओं एवं भय से मुक्त होगा तथा विश्वात्मा के साथ एकात्म भाव का सम्पर्क स्थापित होगा। तभी कुल सृष्टि के प्रति प्रेम और उदारता से युक्त सज्जन

भाव का हृदय में विकास होगा और आप शाश्वत सत्ता पर अपने ख़्याल व दृष्टि को केन्द्रित कर, निष्काम यानि अकर्त्ता भाव से समस्त कर्त्तव्य-कर्मों को सम्पन्न करने में सक्षम बनोगे। इस तरह धर्म इहलोक और परलोक दोनों से आपको व्यवहारतः सम्बन्धित कर, मानवोचित सभ्य और सुसंस्कृत रूप प्रदान करेगा और सर्वहित की भावना से ओत-प्रोत कर अखंड एकता व एक अवस्था में खड़ा कर देगा। जानो यही सम्पूर्ण आत्मविकास की एकमात्र कुंजी है। इसी महत्ता के दृष्टिगत सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

इन्सान है इन्सानी दिखा,
इन्सानी दिखा कुर्बानी दिखा,
कुर्बानी दिखा फिर नाम चला
नाम चला फिर ध्यान लगा,
फिर कंचन हो के आ
फिर तूं साडे दर्शन पा,

ज्योति स्वरूप नाम कहलवा, बिन सूरजों अपने प्रकाश नूं तूं पा

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान सप्तम,
भाग-तृतीय, कीर्तन न० 28)

अर्थात् हे इन्सान ! इन्सान होने के नाते इन्सानी दिखा यानि मनुष्यता के योग्य आचरण अपना कर सजनता का प्रतीक बन जा और समदृष्टि हो जा। इस संदर्भ में ऐसा पराक्रम दर्शाने हेतु अपनी 'हौं-मैं' यानि समस्त बुरे भाव-स्वभावों की कुर्बानी दिखाने से भी मत कतरा अपितु इसके स्थान पर स्वधर्म पर डटे रहने हेतु सच्चे दिल से ईश्वर की चरण-शरण में आ जा और समर्पित भाव से 'नाम' यानि आत्मबोध कराने वाले शब्द का युक्तिसंगत अफुरता से सिमरन करते हुए उसी में लीन हो जा। इस तरह पूरी तरह ध्यानस्थ हो, कंचन यानि खालस सोना हो जा और आत्मेश्वर का दिव्य साक्षात्कार कर ज्योति स्वरूप नाम कहा व बिन सूरजों अपने प्रकाश को पा अपना जीवन सफल बना। हम सब ऐसा करने में कामयाब हों इसलिए

सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

सत्य को धारण करते हुए धर्म के रास्ते पर हम सीधे विचरते जावें

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान सप्तम, भाग-तृतीय, बुधवार का तीसरा बोर्ड, कीर्तन न० 15)

धर्म का अनिवार्य तत्त्व

स्पष्ट है, मन की चंचलता आदि स्वाभाविक प्रवृत्तियों पर रोक लगा, हर दशा में मर्यादित आचरण करना तथा कर्म को कर्त्तव्य यानि स्वधर्म मानकर निष्काम भाव से कुशलतापूर्वक सम्पन्न करना ही धर्म का अनिवार्य तत्त्व है। इसीलिए सत्कर्मजन्य अन्तःकरण की विशेष वृत्ति को धर्म कहा जाता है। आप भी इस वृत्ति से सराबोर होने हेतु उचित-अनुचित का विचार कर तथा करणीय/अकरणीय, पाप/पुण्य में भेद कर मर्यादित आचरण करो और अकर्त्ता भाव से अपने समस्त कर्त्तव्यों का पालन हँस कर करो क्योंकि शास्त्र कह रहा हैः-

भैणां पाप न करो धर्म मार्ग चलो

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान प्रथम,
भजन न० 39)

अर्थात् पाप यानि इस लोक में बुरा माने या समझे जाने वाले तथा परलोक में अशुभ फलदायक बुरे व अहितकारी अनुचित कर्म करने छोड़ दो और इसके स्थान पर धर्म यानि उचित-अनुचित का विचार करते हुए केवल वे कल्याणकारी निर्दिष्ट सत्कर्म/सुकर्म करो जिसका करना उचित और आवश्यक है। जानो ऐसा करना इसलिए भी अनिवार्य है क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है :-

सुकर्म और धर्म दा सजनों
ईश्वर साथी होता है।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान सप्तम,
भाग-प्रथम, कीर्तन न० 4)

आप भी सजनों ईश्वर का संग-साथ प्राप्त करने हेतु सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में बताई युक्ति

अनुसार धर्म का सवाल हल कर, जीवन आनन्द से बिताओ।

धर्म का सवाल हल करने का तरीका

इस संदर्भ में सजनों सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कहता है:-

धर्म नू जो जितना चाहवो,
महाराज जी दे नैनां नाल नैन मिला के
फिर जो मन मंदिर सोई जग अन्दर मुकम्मल
एहो दृष्टि सजनों दिखाओ
सम दा कोई सवाल नहीं फिर दिव्य दृष्टि दा
सबक़ लै के अपना जीवन बनाओ

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान सप्तम, भाग-तृतीय, कीर्तन न० 16)

अर्थात् धर्म के सवाल पर यदि फतह पाना चाहते हो यानि अपने मूल वास्तविक धर्म को अगर धारण करना चाहते हो तो दुनियां की तरफ से मुख घुमा, परमात्मा के नैनों के साथ नैन मिलाओ। फिर जो

प्रकाश मन मन्दिर में देखा है वही प्रकाश सारे जग अन्दर देखते हुए सत्य को सर्वांगपूर्ण अपनी ध्यान दृष्टि में ठहरा लो। जानो ऐसा उद्यम दिखाने पर सम का कोई सवाल नहीं रहेगा यानि समभाव नज़रों में स्थित हो जाएगा और आप सजनता के प्रतीक बन दिव्य दृष्टि का सबक़ प्राप्त कर अपना जीवन सफल बना लोगे। इसी संदर्भ में आगे शास्त्र सावधान करते हुए कहता हैः-

फिर संतोष धैर्य जिह्वा हिवे जैंदी सच
हां..हां..हां...हां..
धर्म दा रस्ता लै,
ओ किसे बात वल्लों न झुखे।।
ओहदा संकल्प पकड़िया गया फिर सम दा
कोई सवाल नहीं

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान सप्तम,
भाग-तृतीय, कीर्तन न० 5)

अर्थात् संतोष-धैर्य का सिंगार पहन व जिह्वा से

सत्य का वर्त-वर्ताव करते हुए, धर्म का निष्काम रास्ता पकड़ उस पर सीधे-सीधे चल पड़ो। ऐसा करते समय सावधान रहो कि किसी भी हालात या अवस्था के वशीभूत हो आपकी जिह्वा व संकल्प न झुखे क्योंकि झुखना है झुरना यानि यह बहुत अधिक दुःखी या शोकग्रस्त होकर नकारात्मक बातें सोचने, बोलने व करने का स्वभाव है। अतः अगर शत्-प्रतिशत् धर्म का सवाल हल कर अपना यथार्थ जानना चाहते हो तो किसी कारणवश भी अपने संकल्प को झुखने मत दो। जानो ऐसा अदम्य पुरुषार्थ दिखाने पर आपका संकल्प आत्मनियन्त्रण की दृढ़ता के कारण आपकी पकड़ में आ जाएगा और आपके लिए सम का कोई सवाल नहीं रहेगा। इस तरह आप सहज ही समभाव-समदृष्टि का सबक़ आत्मसात् करने के योग्य बन, सतवस्तु में प्रवेश पा जाओगे और विश्राम अवस्था में आ जन्म की बाज़ी जीत जाओगे।

निष्कर्ष

गहन व व्यापक धर्म तत्त्व के संदर्भ में हुई इस विवेचना से स्पष्ट होता है कि धर्म ही अंतर्दृष्टि से प्रेरित उच्चतम चेतना का आदर्श है जो मनुष्य के भीतर सभी प्रकार के दिव्य विचारों को जन्म देता है तथा उन्हें अनुभवगम्य बनाने की चेष्टा करता है। इसी द्वारा मनुष्य में कर्त्तव्यबोध जाग्रत होता है और उसका नैतिक व चारित्रिक निर्माण होता है। यही नहीं इसी से एंद्रियिक कामना से रहित आत्म स्वरूप में अवस्थिति होती है तथा इसी से जीवन में संतुलन व सामंजस्य तथा विश्व में नैतिक व्यवस्था स्थापित होती है। इस तरह आत्मदर्शन का बोध धर्माचरण से ही होता है व इसी से व्यक्ति व समाज दोनों का ही कल्याण होता है। इस महत्ता के दृष्टिगत सजनों सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अनुसारः-

धर्म दे रस्ते ते आप चलो ते सजनां नूं चलना सिखा दीजियो

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान सप्तम (द्वितीय), कीर्तन न० 34)

अर्थात् एकता, एक अवस्था में सधे रहने हेतु स्वयं तो धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार धर्मबुद्धि से मर्यादित आचरण करना सुनिश्चित करो ही, साथ ही अन्यों को भी धर्मज्ञ बनने का पाठ पढ़ा, धर्म कमाओ।

Learn the science of inner dimensions
at **Dhyan-Kaksh**
School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एंव समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities
Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm
at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

मानवता के गुण

- संतोष-परिभाषा
- संतोष विकसित करने का साधन
- धैर्य-परिभाषा
- धैर्य का व्यावहारिक रूप
- धीर व्यक्ति की पहचान व धैर्य धारणा से लाभ
- सत्य-परिभाषा
- सत्य को विकसित करने का साधन
- सत्-संगति की महत्ता
- सत्यभाषी बनने की महत्ता
- धर्म-परिभाषा
- धर्म का विषय एवं उद्देश्य
- धर्म के निमित्त समर्पण
- निष्कामता-अर्थ
- निष्काम रास्ते की बाधा एवं उससे उबरने की युक्ति
- परोपकार

चित्त-वृत्तियों के निरोध का साधन

- अभ्यास-अर्थ
- अभ्यास सफलता का मूल
- वैराग्य
- वैराग्य-कसौटी
- मौन-अभिप्राय
- मौन और वाणी
- मौन का जीवन महत्त्व

Offline classes and activities

Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm

at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

आप इस विषय का वीडियो निम्नलिखित लिंक (QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं

View this class by scanning this QR code link

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org

INTERNATIONAL OPEN ORATORY CONTEST
www.dhyankaksh.org

INTERNATIONAL OPEN POETRY RECITATION CONTEST
www.dhyankaksh.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyan-Kaksh Social Media

Contact

Mobile : +91 8595070695
Email: contact@dhyankaksh.org
Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2

Disclaimer: The contents of this book are intended to foster universal human values, consciousness, fraternity, and love for humanity without endorsing or promoting any specific religious belief